"उर्दू भाषा की उत्पत्ति और विकास"

डॉ. इशरत खान

जब आर्य लोग भारत में आये तो यहाँ बसे पुराने लोगों को पराजित कर अपना राज्य उत्तरी भारत में स्थापित कर लिया। आर्य लोग जो भाषा बोलते थे, उसे आर्याई भाषा कहते हैं। संस्कृत उसीकी एक शाखा है। कुछ समय पश्चात संस्कृत ही हिन्दुस्तानी आर्यों की भाषा बनी। जो लोग युग युग से भारत में रहते चले आ रहे थे, वे या तो अपनी पुरानी स्थानीय भाषाएँ बोलते थे या मिली जुली भाषाएँ बोलते थे, क्योंकि साधारण लोग संस्कृत नहीं बोल सकते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्कृत केवल उच्च वर्ग के लोगों की भाषा बन गई और साधारण लोग उससे दूर होते चले गये।

जब संस्कृत भाषा में वेदों की रचना हुई तो वह परिनिष्ठित भाषा बन गई। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्कृत केवल शिक्षित वर्ग के लोगों की भाषा बन गई और साधारण लोग उससे दूर होते चले गये। जनता सरल संस्कृत स्थानीय भाषा को बोलने लगी, परन्तु जब इस स्थानीय भाषा में पाणिनि ने अपना व्याकारण लिखा तो यह भाषा भी व्याकरण के नियमों में बन्ध गई और भाषा की स्तरीयता के कारण, सामान्य जन की पकड़ से भाषा दूर होती गई। तब जनता ने प्राकृत भाषाओं को बोलना शुरू किया परन्तु जब प्राकृत भाषाओं में साहित्य लिखा जाने लगा तो उसका स्तर भी साधारण लोगों से बहुत ऊँचा हो गया।

इसके पश्चात अपभ्रंश भाषा को जनता ने अपनाया परन्तु अपभ्रंश भी कालान्तर में परिनिष्ठित हो गई तो भारत की प्रान्तीय बोलियों को महत्व मिलने लगा। जैसे ब्रजभाषा, खड़ीबोली, अवधी गुजराती, मराठी आदि।

इसी खड़ीबोली ने हिन्दी उर्दू भाषाओं को जन्म दिया।

उर्दू भाषा की विकास परम्परा को निम्न रेखाचित्र के माध्यम से अच्छी तरह समझा जा सकता है।

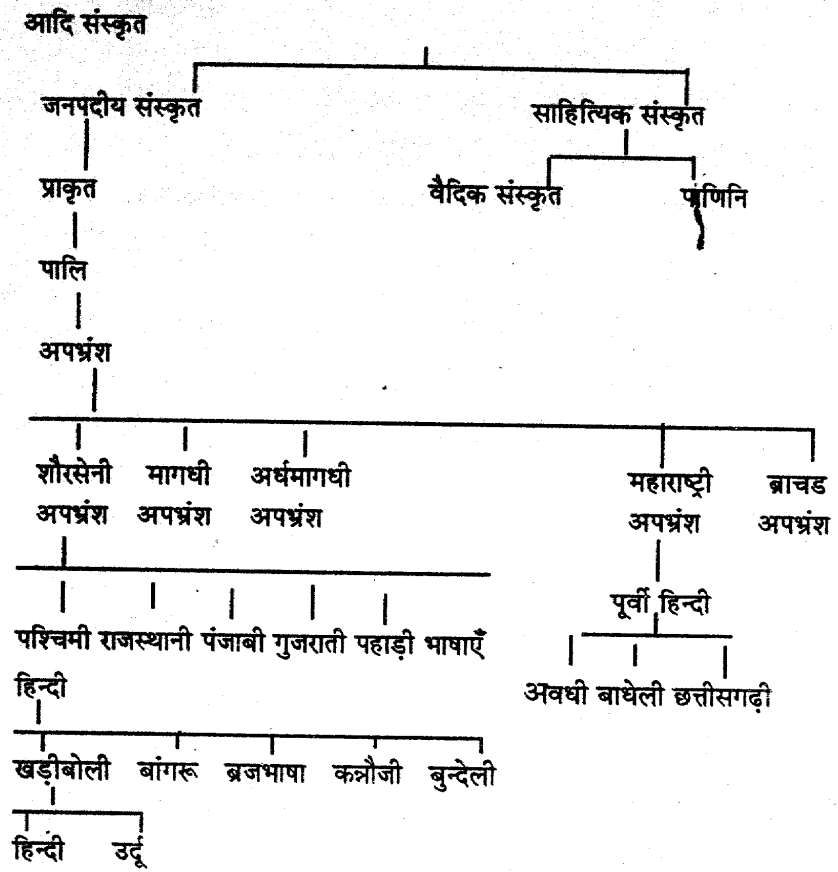

सन् १००० ई० के पश्चात से भारत में जो मिली जुली भाषाएँ बोली जाने लगी थीं उन्हीं में एक भाषा उर्दू भी थी। बाहर से आने वाले उर्दू भाषा अपने साथ नहीं लाये थे, न आर्य, न तुर्क, न पठान और मुग़ल लोग। उर्दू भाषा ने भारत में ही जन्म लिया और यहीं परवान चढ़ी।

भारत के विभिन्न क्षेत्रो में जब प्राकृतों का विकास होने लगा तो संस्कृत का प्रयोग धीरे-धीरे कम होने लगा और यह एक वर्ग विशेष की भाषा बनकर रह गई। संस्कृत भाषा को उस समय एक बड़ा धक्का लगा जब महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी द्वारा देश में धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न हुई। दोनों ने अपने अपने धर्म का प्रचार स्थानीय बोलियों में किया। साधारण जनता ने इस बात का बहुत स्वागत किया। इससे पता चलता है कि प्रारंभ से ही साधारण जनता

की भाषा, मिली जुली भाषा रही है ।

आठवीं शताब्दी में जन मुसलमान सिन्ध में आये तो उनके प्रभाव से कोई नई भाषा नहीं बनी । केवल इतना ही हुआ कि उस समय जो नई सिन्धी भाषा बन रही थी, उसमें दैनिक प्रयोग में आने वाले कुछ शब्द सम्मिलित हो गये। फिर दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में मुसलमान भारत में आये और पंजाब तक बस गये ।

इस प्रकार उनमें और स्थानीय जनता में दो सौ वर्षों तक आपसी मेल रहा और यहाँ बोली जाने वाली भाषा में भी उनके कुछ शब्द धुलमिल गये परन्तु जिस प्रकार पंजाब में पंजाबी भाषा बन रही थी उसी प्रकार दिल्ली के पास बोली जाने वाली भाषाओं से मिलकर उर्दू भी जन्म ले रही थी । दिल्ली में और उसके पूरब में जो भाषा बोली जा रही थी, उसे खड़ीबोली कहते थे । कब तक इसमें कुछ शब्द अरबी, फारसी और तुर्की के सम्मिलित हो चुके थे और यह सूफी संतों, व्यापारियों, सैनिकों और अधिकारियों द्वारा देश के अन्य भागों में भी पुहँचने लगी ।

प्रारम्भ में इस भाषा का नाम 'हिन्दवी' और 'देहलवी' रहा । गुजरात में इसे 'गूजरी' और दक्षिण में 'दकनी' कहा गया । शायरी की भाषा को दिल्ली में 'रेख्ता' कहा गया । कभी इसे 'उर्दू-ए-मुअल्ला' भी कहा गया, परन्तु अन्त में इसका नाम उर्दू ही रहा ।

भारत में उर्दू भाषा के विकास पर दृष्टि डालने से पूर्व यह बात उल्लेखनीय है कि भाषा विज्ञान के विद्वान मसूद हुसैन *१ ने इस दिशा में बहुत गहराई से शोध कार्य किया है तथा अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-ज़बाने उर्दू' (उर्दू भाषा का इतिहास) *२ में इस विषय का विस्तारसे उल्लेख किया है । उनका कहना है कि जिस समय प्राकृतें विकसित होकर साहित्यिक भाषाओं में परिवर्तित हो

---

*१ डॉ. मसूद हुसैन-भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, उर्दू विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष भाषा विज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा भूतपूर्व उपकुलपति जामिया मिलिया, दिल्ली ।

*२ डॉ. मसूद हुसैन खाँ ; तारीख-ए-ज़बाने उर्दू ; एजूकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़ प्रथम संस्करण सन् १९८२ ई० ।

रही थीं तथा उच्च वर्ग के लोगों में बोली जाने लगी थीं उस समय उनका नाता साधारण जनता की बोली से टूटना आरम्भ हो गया ।*१

इन बोलियों का आरम्भ छठीं शताब्दी से हुआ था तथा भारत की नई आर्य भाषाओं के शुरू होने का समय १००० ई० माना गया है । 'अपभ्रंश' का शब्द किसी विशेष भाषा के लिए प्रयोग नहीं किया जाता था। पढ़े लिखे लोग अनपढ़ों के भाषा को पभ्रंश कहा करते थे । 'अपभ्रंश' तीन प्रकार की बताई गई है।

१. नागर अपभ्रंश :- यह गुजराती और राजस्थानी की पुरानी बोलियों का साहित्यिक रूप था, परन्तु इस पर 'शौरसेनी' का अधिक प्रभाव था ।

२. ब्राचड अपभ्रंश :- यह सिन्ध में बोली जाती थी तथा वर्तमान सिंधी भाषा इसी से निकली है ।

३. उपनागर अपभ्रंश :- यह नागर अपभ्रंश तथा ब्राचड अपभ्रंश के मेल से बनी थी । इसका रिवाज पश्चिमी राजपूताना तथा दक्षिणी पंजाब में था । 'शौरसेनी अपभ्रंश' उस समय सारे उत्तरी भारत की संपर्क भाषा (लिंगवा फ्रेंका) बन चुकी थी । यह पंजाब तथा गुजरात से लेकर बंगाल तक बोली जाती थी । डॉ. मशूद हुसैन ने यह सिद्ध किया है कि उर्दू तथा अन्य वर्तमान भाषाएँ सीधी प्राकृतों से पैदा नहीं हुई थीं बल्कि दोनों के बिच में एक कड़ी और भी है, अर्थात प्रकृतों में परिवर्तन आने के पश्चात पहले 'अपभ्रंशों' ने जन्म लिया फिर उनसे उर्दू तथा अन्य भाषाएँ पैदा हुईं ' शौरसेनी अपभ्रंश' से जिन भाषाओं का नाता जुड़ता है, वे हैं- (१) खड़ी बोली या हिन्दुस्तानी (वर्तमान उर्दू व हिन्दी) (२) राजस्थानी (३) पंजाबी (४) गुजराती तथा पहाड़ी बोलियाँ ।

'खड़ीबोली' उर्दू के महत्व का ऐतिहासिक सुबूत अमीर खुसरो (सन् १२५३ ई० से १३२५ ई०) तथा अबुल फज़ल के लेखों में भी मिलता है। उन्होंने इसे 'देहलवी जबान ' कहकर इसकी अलग ही हैसियत को माना है । अमीर खुसरो ने आपनी एक रचना में निम्नलिखित हिन्दुस्तानी बोलियों के नाम गिनाये हैं, जिनमें 'ज़बान-ए-देहली' भी सम्मिलित है ।

पहले अमीर खुसरो ने यह उल्लेख किया है कि चूँकि मैं हिन्दुस्तान में पैदा हुआ हूँ, इसलिए कुछ शब्द इसकी भाषाओं के सम्बन्ध में भी कहना चाहता

*१ डॉ. मसूद हुसैन खाँ ; तारीख-ए-ज़बाने उर्दू ; एजूकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़ प्रथम संस्करण सन् १९८२ ई० । पृष्ठ सं० २५

हूँ, इस समय हर सूबे की अलग - अलग बोली है जिसकी अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं ।

१. सिन्धी २. लाहौरी ३. कश्मीरी ४. बंगाली ५. गौड़ी ६. गुजराती ७. तैलंगी ८. तमिल ९. धोर समुन्द्री १०. अवधी ११. गुजरी १२. जबान-ए-देहली *१

अमीर खुसरो ने तीन सौ वर्ष पश्चात अकबर के ज़माने में भी भिन्न भिन्न प्रान्तों में यही बोलियाँ बोली जाती थीं। अबुल फज़ल ने निम्नलिखित भाषाओं का उल्लेख किया है ।

१. देहलवी २. बंगाली ३. मुलतानी ४. मारवाड़ी ५. गुजराती ६. तैलंगी ७. मराठी ८. कर्नाटकी ९. सिन्धी १०. अफग़ानी ११. कश्मीरी १२. बिल्लोचिस्तानी

'देहलवी ज़बान' (खड़ीबोली) एक ओर उर्दू के रूप में अमीर खुसरो और सूफियों के हाथों परवान चढ़ रही थी और दूसरी ओर लशकरियों, व्यापारियों और साधुओं - सन्तों द्वारा पंजाब, दकन और पूरवी क्षेत्रों में इसका विस्तार हो रहा था। देहली की यह भाषा लशकरियों के साथ भारत के जिन-जिन क्षेत्रों में पहुँची वहाँ इसे सम्मान मिला और यह वहाँ - वहाँ की बोली बनती चली गई। 'दकन' में उर्दू की तरक्की काफी तेज़ी से हुई। सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में तो वहाँ सैकड़ों कवियों तथा पुस्तकों के नाम मिलते हैं, जैसे वली औरंगाबादी, ख्वाजा गेसूदराज़ बन्दानवाज तथा मुल्ला वजही आदि।

जब भारत में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ने लगा तो उन्होंने सन् १८०० ई॰ में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की जहाँ अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तानी भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं, इन भाषाओं में उर्दू को काफी महत्व दिया जाता था।*२ उर्दू ही उस समय भारत के अधिक भागों में बोली और समझी जाती थी ।

सन् १८२७ ई॰ में फारसी के स्थान पर उर्दू को सरकारी भाषा घोषित कर

---

*१. मसूद हुसैन खाँ ; मुक़द्दमा तारीख-ए-ज़बान-ए-उर्दू पाठ सं॰ ७८

*२ हिन्दुस्तानी विभाग के प्रथम अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट ने उर्दू को अधिक महत्व दिया ।

दिया गया। उसी समय दिल्ली में भी 'दिल्ली कॉलेज' की स्थापना हुई तथा वहाँ सभी विषय उर्दू में पढ़ाये जाने लगे। अवश्यकतानुसार पुस्तकों के अनुवाद उर्दू में किये गये। अवध में भी विज्ञान की पुस्तकों के अनुवाद उर्दू में हुए। हैदराबाद दकन में यह कार्य बड़े पैमाने पर हुआ।

१८ वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में उर्दू प्रेस स्थापित हो चुके थे। उस समय टाइप की हुई पुस्तकें प्रकाशित होती थीं। सन् १८३६ ई० के पश्चात प्रेसों की स्थापना और प्रकाशन का कार्य अधिक होने लगा। समाचार-पत्रों के प्रकाशन का कार्य सन् १८३६ ई० से प्रारम्भ हो गया था।

स्वतत्र भारत में भी समस्त भारतीय भाषाओं के बीच में भी उर्दू का अपना एक अलग स्थान है। उसको सरकारी सहायता और संरक्षण भी प्राप्त है।

कई प्रदेशों में 'उर्दू एकेड़ेमी' की स्थापना की गई है। स्कूलों में उर्दू पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय में उर्दू के अध्ययन और अध्यापन का अच्छा प्रबन्ध है।

कश्मीर में सरकारी भाषा उर्दू है। बिहार में उर्दू को द्वितीय सरकारी भाषा घोषित किया गया है। विभिन्न विषयों की पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद करने हेतु केन्द्र सरकार ने एक ब्यूरो की स्थापना की है। मुशायरों के आयोजन को प्रोत्साहन एवं संरक्षण दिया जाता है। उर्दू गज़लों की लोकप्रियता ने उर्दू भाषा को एक नया मोड़ और नया बल दिया है।

यूँ तो उर्दू भाषा का विकास पाकिस्तन में भी हो रहा है, साथ ही अब इसे रूस, अमेरिका, तुर्की, ईरान, मिस्र चेकोस्लावाकिया तथा इंग्लैंड़ में भी काफी महत्व दिया जा रहा है।

हिन्दी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा